स्वामी विवेकानंद
वर्तमान पीढ़ी के लिए संदेश

58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन - 26 से 28 दिसंबर, 2012, पटना में

मा. सुरेश सोनी

सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

द्वारा दिये हुए भाषण पर आधारित

प्रकाशक : **केन्द्रीय कार्यालय मंत्री**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

3, मार्बल आर्च, सेनापति बापट मार्ग, माटुंगा रोड (प.रे) के सामने, माहिम, मुम्बई. 400016

दूरभाष : 022-24306321, फैक्स : 022-24313938

Website : www.abvp.org Email :info@abvp.org

निवेदन

राष्ट्र पुरूष स्वामी विवेकानंद के जन्म के 150 वर्ष आज देशभर में हम सब पुरे हर्षोल्लास के साथ मना रहे है। एक ऐसा विरल व्यक्तित्व जिसने अपने जीवन काल के 39 वर्ष की अल्प आयु में इस देश के लोगो के अंदर न केवल आत्मविश्वास का भाव जागृत किया बल्कि अपने देश, धर्म, पूर्वज, इतिहास के प्रति स्वाभिमान का भी जागरण किया। देश के युवा वर्ग में एक चेतना का संचार करते हुए भारत के उज्वल भविष्य का स्वप्न दिया एवं इस हेतु संकल्पबद्ध होने के लिए प्रेरीत किया। स्वामी विवेकानंद के विचार की आज उतनी ही प्रासंगिकता है।

स्वामी विवेकानंद के विचार और आदर्शों के साथ चलने वाले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के गत दिसंबर माह में पटना में सम्पन्न 58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन में देशभर से आये छात्र समुदाय के बीच में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. सुरेश जी सोनी द्वारा दिये गये भाषण **स्वामी विवेकानंद: वर्तमान पीढ़ी के लिए संदेश** पर आधारित यह पुस्तिका निश्चित ही आज की पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक बनेगी।

दि. 10 मार्च 2013
महाशिवरात्री

प्रा. पी.मुरली मनोहर
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

स्वामी विवेकानंद : वर्तमान पीढ़ी के लिए संदेश

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा.मुरलीमनोहर जी, राष्ट्रीय महामंत्री उमेश दत्त जी, देश के कोने-कोने से आये हुए वैभवशाली देश का सपना मन में सँजोकर, उसे साकार करने में अपना सब कुछ लगाने की प्रेरणा से आये हुए युवा बहनो, भाईयो एवं नागरिक वृंद।

स्वामी जी का सपना और उस सपने को साकार करने में हमारा संकल्प यह हमने सुना। हजारों साल से देश में दुनिया के विभिन्न कोनों से हुए आक्रमणों के कारण जब भारत न केवल राजनैतिक दृष्टि से अपितु विचार के धरातल पर भी गुलाम था, भावना के धरातल पर जिसका विश्वास टूट गया था, उसमें से उसको बाहर निकालने की एक प्रक्रिया का सूत्रपात हुआ 11 सितंबर 1893 को अमेरिका के विश्वधर्म महापरिषद के आयोजन से। एक अनाम युवक जिसे कोई नहीं जानता, जिसे सभा में भाग लेने की अनुमति नहीं है क्योंकि उसके पास किसी संस्था का प्रमाणपत्र नहीं है, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता हो। लेकिन नियति की योजना, उसे अनुमति मिली और जब बोलने के लिये खड़े हुए और जैसे ही मुँह से वाक्य निकला sisters & brothers of America तो कहते हैं कि जो 7000 लोग उस सभाभवन के अंदर थे, sisters & brothers ये शब्द उनके कानो में ही नहीं पहुँचा, वह उनके दिलो में पहुँचा और खड़े होकर लगातार पाँच-सात मिनट तक तालियों की ध्वनि से स्वागत करते रहे, क्या था इन शब्दो में ?

एक दूसरे देश में जाकर दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों के कोने-कोने से आये हुए लोगों के प्रति जो दो शब्द थे बहनों और भाईयो, ये केवल शब्द नहीं थे अपितु हजारों-हजारों साल से भारत की धरती के ऊपर संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिये जो एक साधना हुई, सारी सृष्टि को अपना परिवार मानने की जो भावना थी, वो हजारों वर्षों की भारत की तपस्या और परंपरा मानो उन शब्दों के माध्यम से दुनियाभर के आये हुए उन लोगों के हृदय में संक्रमित हुई और उसका यह स्वाभाविक परिणाम था। और इस घटना ने एक युग-परिवर्तन किया और देखते-देखते एक अनाम युवक विश्व विख्यात बन गया और सारी दुनिया स्वामी विवेकानंद के नाम से उन्हें जानने लगी। स्वामी जी के जो शब्द थे, स्वामी जी के देहावसान के 30 साल बाद रोमा रोलाँ ने जब उनके भाषणों को पढ़ा तो रोमा रोलाँ लिखता है कि जिसके ये शब्द हैं, आज 30 साल बीतने के बाद भी, कागज के कोरे पन्नों पर कुरेदे हुए शब्द को पढ़ते हैं तो पढ़ने वालों के हृदय के अंदर जैसे विद्युत का स्पंदन होता

है। कागज के शब्दों को पढ़ते हुए जो मन के अंदर भाव जागरण होता है, तो जिस समय ये शब्द उस वक्ता के मुँह से निकले होंगे और जिन्होंने प्रत्यक्ष सुना होगा उनके मन पर क्या परिणाम हुआ होगा यह सोचा जा सकता है। जो बात रोमा रोलाँ ने 30 साल बाद लिखी थी आज 150 साल के बाद भी जब हम स्वामी जी की जन्मसार्धशती मना रहे हैं और देश में एक अभियान चला रहे हैं, स्वामी जी के वे शब्द, आज 150 वर्ष बाद भी उनके अंदर वही सामर्थ्य, जीवंतता, वही प्रेरणा विद्यमान है, यह हम महसूस करते हैं और इस नाते से स्वामी जी की आज उस समय से अधिक प्रासंगिकता है। इस नाते जब हम सोचते है कि आखिर स्वामी विवेकानंदजी पश्चिम में गए तो, उनका हेतु क्या था? योगी महर्षि अरविंद ने उसका विवेचन करते हुए कहा कि विवेकानंद का पश्चिम में जाना विश्व के लिये इस बात का एक जीवंत संकेत था कि भारत अब जाग चुका है। केवल जीवित रहने के लिये नहीं बल्कि विजयी होने के लिये। केवल इतना ही नही हजारों साल की निद्रा को त्याग कर भारत जाग रहा है और न केवल भारत खड़ा होगा बल्कि विश्वविजय भी करेगा, यह संकेत उस धर्म महासभा में उनके जाने की घटना का है। और यह जो श्री अरविंद ने व्याख्या की उससे पूर्व संपूर्ण विश्व में भारत अपने मन के अंदर कुछ गौरव प्राप्त कर सके इस तरह की कोई बात नहीं लगती थी। लेकिन जब धर्म महासभा में दुनियाँ की सभी सभ्यताओं, संस्कृतियों, धर्मों के बीच में भारत की आध्यात्मिकता, भारत का धर्म, संपूर्ण विश्व के कल्याण का जो उसका सामर्थ्य है, उसकी प्रस्तुति स्वामी जी ने की; उसके परिणाम-स्वरूप न केवल पश्चिमी जगत बल्कि भारत के सामाजिक जीवन का हर कोना स्वामी विवेकानंद के उस सामर्थ्य से अनुप्राणित होकर उसमें आत्मविश्वास का संचार हुआ। पश्चिम का कोई भी देश हो, स्वामी जी के विचारों उनकी वैचारिक व्याख्याओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। धर्म महासभा में बोलने की पात्रता नहीं है, क्योंकि कोई प्रमाणपत्र नहीं है, यह कठिनाई जब हावर्ड के प्रा.जॉन राईट को बताई तो प्रा. राईट ने कहा, विवेकानंद को बोलने के लिए प्रमाणपत्र के लिए कहना याने जैसे सूर्य को कहते हो कि तुम प्रमाणपत्र दो कि तुम प्रकाश देते हो। उन्होंने कहा कि अमेरिका के सारे प्रोफेसर अगर मिला दिये जायें तो भी उनका ज्ञान इस एक व्यक्ति के सामने कम पड़ेगा। उस जमाने के रूस के टाल्सटॉय हो अथवा प्रख्यात वैज्ञानिक निकोलस टेस्ला हो, जर्मनी का प्रा.डायसन हो या अमेरिका का स्वतंत्र चिंतक मेरी स्नेल, जो मिला वही अनुप्राणित हुआ। अभिभूत हुआ लेकिन उस विश्वविजय के बाद भारत के अंदर जो मानसिक परिवर्तन आया, एक व्यक्ति ने संपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन को प्रभावित किया । राष्ट्रीय आंदोलन के

किसी भी क्षेत्र में काम करने वाला कोई भी नेता हो उसके मन के अंदर एक स्वाभिमान, एक आत्मविश्वास का संचार स्वामी जी की इस यात्रा ने किया । महात्मा गांधीजी ने लिखा स्वामी विवेकानंद को पढ़ने के बाद मेरे हृदय के अंदर देश के प्रति जो भक्ति थी वह हजार गुना अधिक बढ़ गई। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि भारत को अगर समझना है, तो और कुछ करने की जरूरत नहीं केवल विवेकानंद को पढ़ो। संपूर्ण भारत, उसका इतिहास, उसकी यात्रा आपकी समझ में आ जायेगी। सुभाष बाबू ने कहा आज अगर वे होते तो मैं अपना जीवन उनके चरणों में समर्पित कर देता, आगे उन्होंने कहा कि वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के आध्यात्मिक पिता थे। चक्रवर्ती राज गोपालाचारी ने कहा उन्होंने भारत की रक्षा की। पंडित नहेरू जो progressive थे उन्होंने कहा कि deppressed और demoralised हिन्दू mind के लिये वे टॉनिक के समान आये। और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अंदर कोई छोटा-बड़ा व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिसको उन्होंने अनुप्राणित ना किया हो। ये बात मैंने इसलिए कही कि आज जब इस 150 वीं जन्म जयन्ती के संदर्भ में हम स्वामी विवेकानंद के बारे में विचार करेंगे तो पिछले कुछ वर्षों के अंदर एक बहुत बड़े तात्विक, एक बहुत बड़े दार्शनिक, बहुत बड़े आध्यात्मिक नेता, विश्व विख्यात आध्यात्मिक पुरुष के रूप में स्वामी विवेकानंद का व्यक्तित्व अधिक विशाल समाज के सामने आ रहा है। लेकिन उनके जीवन का जो मूल था, जो मूल भाव था वह शायद spiritual vision के साथ भारत का पुन:निर्माण राष्ट्रीय पुरुषार्थ का जागरण, यह जो उनका स्वरूप था वह जितने प्रमाण में देश के सामने आना चाहिए था, वो नहीं आया और उस नाते से आज स्वामी जी के जीवन का विचार करते समय हमें उनके उस स्वरूप को अधिक देखने की आवश्यकता है।

हम सबसे पहले यह समझें कि आखिर स्वामी जी क्या थे ? स्वामी विवेकानंद ने स्वयं के बारे में एक बार जैसा कहा था, भगिनी निवेदिता ने कहा *He was condensed India.* वे घनीभूत भारत थे, एक व्यक्ति नहीं हैं। और निवेदिता ने उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि वास्तव में He was a condensed India. भारत उनका सर्वोत्तम पॅशन (सबसे गहरी भावनात्मक अनुभूति) था, भारत उनके हृदय में धड़कता था, भारत उनकी नाड़ियों का स्पंदन था, भारत उनका दिन का स्वप्न था, भारत उनका रात का दु:स्वप्न था। भारत उनके रक्त और मज्जा में अभिव्यक्त होता था। और अंत में वह कहती हैं he was India , He was Bharat the very symbol of her spirituality, her purity, her wisdom,her power, her vision & her destiny. भारत की संपूर्ण आध्यात्मिकता,

पवित्रता, बुद्धिमत्ता, शक्ति, दृष्टि और भवितव्य, यह स्वामी विवेकानंद थे। और इस नाते से आज स्वामी जी को उस रुप में समझने की अधिक आवश्यकता है। पर ये जो उन्होंने कहा, हम जानते हैं कि स्वामी रामकृष्ण परमहंस से मिलने के बाद उनका संपूर्ण रूपांतरण हुआ। सभी प्रकार की आध्यात्मिक साधनाएँ, ज्ञान और सामर्थ्य को प्राप्त करने के बाद वे अगर चाहते कि केवल आध्यात्मिक सुख प्राप्त करना है तो रामकृष्ण परमहंस के देहावसान के बाद हिमालय की किसी कंदरा में जाकर बैठकर ईश्वर से साक्षात्कार करते हुए अपना संपूर्ण जीवन बिता सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, अपितु उन्होंने भारत भ्रमण प्रारंभ किया। इस भ्रमण के क्रम में वे हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक 1888 से लेकर 1892 तक घूमते रहे। महलों में गये, झोंपड़ियों में गये, गाँव में गये, जंगलों में गये, पहाड़ों में गये, हर तरह से देश को समझने की कोशिश की, अनुभव करने की कोशिश की। उसकी समस्याओं को समझा और अभी संकल्प में हमने सुना है कि जिस समुद्र की लहरों को लाँघकर, शिला पर बैठकर ध्यान उन्होंने लगाया और इस ध्यान के अंदर भारत का संपूर्ण इतिहास, आज की परिस्थिति और भविष्य के भारत के निर्माण की दिशा निर्धारित की और वह निर्धारित करने के बाद उनके जीवन की आगे की यात्रा प्रारंभ हुई, उसका पहला चरण था कि यदि देश को जगाना है तो इन गोरी चमड़ी वालों के प्रभाव से एक पराभूत मानसिकता में देश जी रहा है, वहीं से जब इस देश की महानता की बात उठेगी तब इस देश का जगना प्रारंभ होगा और वही एक उद्देश्य उनका धर्म महासभा में जाने का था। और निश्चित रूप से और एक दृष्टि से हम देखते हैं कि वहाँ से भारत के नवजागरण का समय प्रारंभ होता है। उस नाते से भारत का उत्थान और विश्वकल्याण में उसकी भूमिका, यही हम सबके सामने होना चाहिए। इसलिए स्वामी जी के कुछ विचार उनकी कुछ कल्पना मैं आपके सामने रखता हूँ।

स्वामी जी का दृढ़ विश्वास था कि भारत का जीवित रहना और अपनी स्वयं की अध्यात्मिक ताकतों के साथ उसका खड़ा होना न केवल भारत के कल्याण के लिये आवश्यक है, बल्कि दुनिया को भी अगर जीवित रहना है, उसमें शांति बनी रहनी है, उसके अंदर अगर समन्वय और संवाद स्थापित होना है तो भारत का जीवित रहना उससे भी जरूरी है। स्वामी जी एक जगह बोलते हैं कि क्या भारत मर जायेगा ? यदि ऐसा हुआ तो दुनिया से आध्यात्मिकता का विनाश हो जायेगा। सभी प्रकार की नैतिकताओं का लोप हो जायेगा, विभिन्न धर्मों के बीच में आपसी समन्वय और सहानुभूति का अंत हो जायेगा। सभी प्रकार की नैतिक आदर्शवादिताओं का अवसान हो जायेगा और तब भोग और

विलासिता का साम्राज्य होगा। नर और नारी उसके देवता होंगे। धन उसका पुजारी होगा, धोखाधड़ी उसकी शक्ति होगी और छल-कपट उसके सहयोगी होंगे और मानव आत्मा की बलि चढ़ायी जायेगी। अंत में वे कहते हैं लेकिन ऐसा नहीं होगा और ऐसा अगर नहीं होने का है कि ये दुनिया हिंसक पशुओं से भरे हुए जंगल के रूप में बदल जाये, ये अगर नही होना है तो भारत को जिंदा रहना और खडा होना जरूरी है। और इस नाते से ये अगर करना है तो भारत के प्रति देखने की दृष्टि कैसी रहनी चाहिए? आज की युवा पीढ़ी के अंदर जब पश्चिम की चकाचौंध देखते हैं तो अपना देश, अपने पूर्वज, अपनी परंपरा के बारे में जिसको आज एक प्रोग्रेसिव माइण्ड कहते हैं उसको अपनी हर चीज गलत लगने लगती है। अपनी निंदा करने में वह आनंद अनुभव करने लगता है। लेकिन दृष्टि कैसी होनी चाहिए? जब वे अमेरिका गए तब अमेरिका और यूरोप अपनी ताकत की चरमसीमा पर थे। इंगलैंड के राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था। उस संपूर्ण यूरोप में चार वर्ष घूमने के बाद जब 1896 में इंगलैंड से भारत के लिए रवाना होने के लिए जहाज के ऊपर चढ़ने लगे तो उनका जो अंग्रेज मित्र था उसने एक प्रश्न किया कि स्वामी जी चार वर्ष तक आपने इस यूरोप का अनुभव किया, (उसके मन में अहंकार था) उसने शब्द प्रयोग किये कि स्वामी चार वर्ष तक इस Glorious, Luxarious & Powerful पश्चिम के अनुभव के बाद आपको आपकी मातृभूमि कैसी लगेगी? जैसे उसने कहा कि Glorious, Luxarious & Powerful पश्चिम के अनुभव के बाद आपको आपकी मातृभूमि कैसी लगेगी? स्वामी जी ने तपाक से उत्तर दिया, यूरोप आने से पहले मैं भारत से प्रेम करता था लेकिन यहाँ से जाने के बाद भारत की मिट्टी का एक-एक कण मेरे लिये पवित्र है, उसकी पानी की एक-एक बूँद मेरे लिये पवित्र है, उसकी हवा का एक-एक झोंका मेरे लिये पवित्र है, वह मेरे लिये तीर्थ स्थल है। अर्थात् अपने देश के प्रति जो भाव है वह कम नहीं हुआ, दृढ़ हुआ। तो दृष्टि कैसी होनी चाहिए? और यह केवल शब्द नहीं था, यह कोई कोरा स्लोगन नहीं था, इसकी अनुभूति लोगों ने की जहाज जैसे ही भारत की धरती पर लगा, स्वामी जी ने जैसे ही जहाज से भारत की धरती का स्पर्श किया, वो विश्व विख्यात संन्यासी उस धूल के अंदर लोटने लगा। उस धूलि को अपने ऊपर डालने लगा। लोगों को लगा कि क्या, स्वामी जी पागल हो गये हैं, क्या? स्वामी जी ये क्या कर रहे हैं? ऐसा पूछने पर स्वामी जी ने कहा इतने साल तक मैं भोग-वासना, स्वार्थपरता इस सबके वातावरण में यूरोप में रहा, इस पवित्र धूलि को अपने ऊपर डाल कर मैं अपने आप को ठीक करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

भारत का अगर उत्थान करना है तो सबसे पहले भारत पर विश्वास आवश्यक है, उसकी धरती पर, उसकी परंपराओं पर, उसकी बाकी चीजों पर। यह एक प्रखर संदेश हमको स्वामी जी से प्राप्त होता है। और उस नाते से कॉलंबो से जब आये तो, कॉलंबो से अल्मोड़ा के यह जो उनके भाषणों की पुस्तक है वह आनेवाले समय में राष्ट्रीय आंदोलन के किसी भी क्षेत्र में, किसी भी व्यक्ति के लिये दिशा और जीवन की प्रेरणा के लिये एक Text Book के समान और एक दृष्टि से उन भाषणों के संकलन ने जो भूमिका निभायी थी, उस दृष्टि से, आने वाले समय के अंदर भारत का निर्माण करना है तो स्वामी जी के विचार, स्वामी जी की जीवन दृष्टि, उनकी प्रासंगिकता का विचार करना होगा।

एक बात उन्होंने हमेशा कही कि एक नया भारत खड़ा हो रहा है। ये पूर्व और पश्चिम के मिलन में से खड़ा होगा; ऐसा मानने की जरूरत नहीं कि दुनिया के किसी भी कोने में कुछ भी सीखने के लिये नहीं है। हर देश दूसरे देश को कुछ न कुछ दे सकता है। और इसलिए आने वाले समय में देश का अगर उत्थान करना है, तो पश्चिम ने जो विज्ञान और तकनीकी के अंदर विकास किया है। हमें उन तत्वों को लेना चाहिए लेकिन पश्चिम का जो सामाजिक जीवन नैतिक मूल्यों से हीन, आंतरिक अन्तर्द्वन्द्वों में है, उसको अगर उनसे बाहर निकालना है, तो भारत के आध्यात्मिक तत्व उसको लगेंगे। दोनों सामाजिक जीवनों की तुलना करते हुए स्वामी जी कहा करते थे, पश्चिम का सामाजिक जीवन एक उन्मुक्त अट्टाहास है लेकिन उसके नीचे बिलखना है, और उसका अंत सिसकने में होगा। भारत में ऊपर-ऊपर मायूसी है लेकिन अंदर जाकर देखेंगे, तो आज भी उन्मुक्तता, आनंद और उल्लास का अनुभव करेंगे। इसलिए भारत की आध्यात्मिकता और पश्चिम की विज्ञान और तकनीकी इन दोनों के समन्वय से आने वाले समय में एक नये भारत का निर्माण होगा, इस दिशा में उन्होंने जोर दिया।

ये करना है, तो आने वाली पीढ़ी का मानस परिवर्तन करना होगा। तो शिक्षा कैसी हो ? वे कहते थे विदेश की शिक्षा से पहले बाहर निकलना चाहिए। दुर्भाग्य से आजादी के बाद भी अपने देश के अंदर वही सब चल रहा है। स्वामी जी ने कहा था कि पुस्तकों में पढ़ाया जाता था, उनके जमाने के में, तो बच्चा यही पढ़ता था कि तुम्हारा पिता मूर्ख था, तुम्हारा दादा महामूर्ख था, तुम्हारे सारे आचार्य पाखंडी थे। जब कॉलेज की पढ़ाई कर युवक बाहर आता है तो निषेध और निंदा करने की खान बन जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने आप को पहचानें, और इसलिए उन्होंने कहा कि तुम ऋषि-मुनियों की संतान हो। "हिन्दू" शब्द यदि आज दुनिया के अंदर निंदा का पात्र है, तो हम

अपने पुरुषार्थ से इस प्रकार का जीवन खड़ा करें कि लोग यह कहने के बाध्य हो जायें कि "हिन्दू" इस शब्द से अधिक पवित्र शब्द दुनिया की किसी डिक्शनरी के अंदर नहीं था। उस प्रकार की परिस्थिति हम उत्पन्न करें और उस नाते से इससे भी आगे उन्होंने बात रखी और वह कहते हुए उन्होंने कहा कि विकास अगर करना है, तो अपनी जड़ को पकड़कर विकास करना है। वे कहते थे कि कोई नदी के प्रवाह को पूरा उलट दे, मोड़ दे, तो विकास नहीं विनाश होगा। उस नदी का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। वैसे ही सामाजिक जीवन का प्रवाह, अपना पुराना सबकुछ छोड़ दे, नये लेने के चक्कर में, उसका अर्थ विकास नहीं; विनाश के अंदर होगा। इसलिए वे कहते हैं कि हमें अपने आपको समझना है, अपनी परंपराओं को समझना, अपनी आध्यात्मिकता को समझना, अपनी विरासत को समझना मन के अंदर उसके प्रति स्वाभिमान लाना फिर सारी दुनिया के अंदर जो कुछ है उसको लेना और वह लेते समय यह निकष रखना जो उचित है उसे अपने ढंग से लेना। यह जो बात स्वामी जी ने कही आज भी वह सारी दुनिया के अंदर मान्य है।

Development की चर्चा चलती है। Development याने विकास, विकास याने आगे जाना। आगे जाना - यह क्या है ? हम धरती के ऊपर चलते हैं। जब पैदल चलते हैं तो एक पैर जमीन के ऊपर रहता है, एक पैर जमीन पे टिका रहता है। जब ऊपर जो पैर है वह जमीन पे टिकता है तब दूसरे पैर को उठाके आगे बढ़ाते हैं, इसी ढंग से विकास होता है। कोई ज्यादा ही प्रोग्रेसिव जैसे आाज-कल बहुत ज्यादा हो गये हैं, ऐसा अगर सोचें, ये क्या है ? अनाप-शनाप पुरानी परंपरा है। मैं नये ढंग से विकास करूँगा और इसलिए अभी जो उनका एक पैर जमीन के ऊपर है, वह ऊपर वाला पैर नीचे रखे बिना नीचे वाला पैर ऊपर अगर करे तो करने में कोई एतराज नही कर सकता है, पर अंत में क्या होगा ? वह धडाम से नीचे गिरेगा। और उस नाते से अपने मूल को छोड़ के जब विकास की ओर जाने की सोचते हैं तो अंत में विनाश होता है। और इस नाते से उन्होंने बार-बार सावधान किया। हाँ अपनी जो कुरीतियाँ हैं, अपनी जो कमियाँ है उन्हें दूर करना। उन्होंने पश्चिम की धरती पर रहते हुए कभी अपने देश की निंदा नहीं की । अपितु निंदा करने वालों को उनकी ही धरती पर उत्तर दिया। ईसाई मिशनरी भारत के विरुद्ध पश्चिम के अंदर भारत के बारे में उल्टा-सीधा प्रचार करते थे। उन्होंने कहा, तुम लोग क्या भारत को चित्रित करते हो ? यहाँ महिलाओं को जिंदा जलाया जाता है, बच्चों को माताएँ पशुओं के सामने फेंक दिया करती है; यहाँ के लोग रथ के नीचे अपने को कुचल लेते हैं। यह ऐसी बात आप करते हो, ये सब करके तुमने भारत के साथ, भारत के समाज और परंपराओं के साथ जो अत्याचार

किया है उसके प्रक्षालन के लिये अटलांटिक महासागर की सतह में पड़ा हुआ सारा कीचड़ निकाल कर तुम्हारे मुँह पे लगा दिया जाये तो भी उसका प्रक्षालन नहीं हो सकता। इस ढंग से पश्चिम की धरती के ऊपर वो उनको जवाब देते थे, भारत में आने पर हमारी जो कमियाँ हैं, हमारे जो कुसंस्कार हैं, हम तो अपने ही पड़ोसियों की निंदा ही नहीं करते, आपस की जो ईष्या है उसके ऊपर भी उतनी ही कठोरता से प्रहार किया, पर उन्होंने कहा है कि समाज के अंदर हमारी जो वास्तविकता है वह ऐसे ही उत्पन्न नहीं हुई। इस नाते से जब एक विकास का पथ उन्होंने हमको बताया और आनेवाले समय के अंदर एक नये भारत का निर्माण करते समय हमें इसका विचार करना होगा कि आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता और तकनीकी के समन्वय से जो नया भारत बनेगा वह जीवन के स्तर पर, सामाजिक जीवन की जितनी भी विकृतियाँ हैं, उन सब को दूर करते हुए लेकिन हमारे जो वास्तविक धर्म के तत्व हैं उनका अपने जीवन के अंदर आविष्कार करना यही एक मार्ग रहेगा।

दूसरी बात उन्होंने कही, इस विस्तार को और बढ़ाना है, तो सामान्य जन का विकास करना होगा। उन्होंने अपने गुरुभाई शशी महाराज को पत्र लिखा उसमें उन्होंने कहा था कि आखिर कन्याकुमारी की शिला पर बैठकर मैंने क्या देखा ? तो मैं सोचता हूँ हम साधू-संन्यासी जो गाँव-गाँव घूमते और धर्म प्रचार करते हैं, केवल मात्र धर्म प्रचार करना निरा पागलपन है। मैं चाहता हूँ कि साधु गाँव-गाँव के अंदर जायें और जाते समय उनके समय जो Scientific Equipment उपलब्ध थे उसका उल्लेख करते हुए वे कहते हैं कि वो Glob, विश्व का मानचित्र, Magic lantern,तरह-तरह के उपकरण को लेकर गाँव-गाँव में घूमे और अपने लोगों को धर्म और दर्शन के साथ-साथ भूगोल, खगोल, दुनिया में हुई प्रगति, इन सबकी जानकारी देते हुए उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने का प्रयत्न करें। और इस नाते से यह जो सामान्य जन हैं उनके प्रति करते समय वह एक संवेदना मन में अनुभव करें। अमेरिका में रहते समय, एक बार, बहुत अच्छा बिस्तर है, मुलायम है, लेकिन नींद नहीं आ रही है, वे रो रहे हैं, पूछा कि क्या बात है ? बोले, इस बिस्तर पर सोते-सोते मुझे लगा कि इधर कितनी समृद्धि है, तो मेरे देश के अंदर लोगों की क्या स्थिति है ? गरीबों की क्या स्थिति है, किस ढंग से वे रहते है ? उसका ही स्मरण करके मुझे रोना आ रहा है।

भारत आने के बाद जब बेलूर मठ बना, रामकृष्ण मिशन बना। एक बार शिष्यों को पढ़ा रहे थे, बंगाल के प्रख्यात नाटककार गिरिशचंद्र घोष आए तो विवेकानंद एक व्याख्या कर

रहे थे। गिरिशचंद्र थोड़ी देर तक सुनते रहे, और फिर उन्होंने कहा कि नरेन (वह बहुत बड़े थे, नरेन ही कहते थे उनको)कि नरेन अपनी कलकत्ता के एक मोहल्ले के अंदर एक परिवार है, उनको तीन दिन से रोटी नहीं मिली है। वो जो दूसरा मोहल्ला है, वहाँ पर एक विधवा हैं आज उसके घर का चलना कठिन हो गया है। ऐसी पाँच-छह जगह के दु:ख दर्द का विवेचन करने के बाद बोले, तेरे वेद वेदांत में इसका इलाज लिखा है क्या ? ये सुनते ही स्वामी जी इतने भावुक हो गये कि धाड़-धाड़ आँसू आने तक वो उठकर चले गये। तब गिरीश घोष ने स्वामी जी के शिष्यों को कहा कि देखो, जो तम्हारा गुरु है उसका सम्मान मैं इसलिए नहीं करता कि वह बहुत बड़ा विद्वान है, सारी दुनिया के अंदर उसका नाम हो गया है बल्कि उसका सम्मान इसलिए करता हूँ कि उसके अंदर संवेदनशील हृदय है। और उस नाते से यह सामान्य जन के जीवन में अगर परिवर्तन लाना है, आज की पीढ़ी को तो यह संवेदना का भाव उसके मन के अंदर चाहिए। एक स्थान पर वे कहते हैं - जब तक करोड़ो लोग भूखे और अशिक्षित रहेंगे तब तक मैं प्रत्येक उस आदमी को विश्वास घातक समझूँगा जो उनके खर्च से शिक्षित तो हुआ है परन्तु जो उन पर तनिक भी ध्यान नहीं देता। इस सामाजिक संवेदना के साथ-साथ लोगों में अपने संपूर्ण इतिहास, अपनी सांस्कृति और परंपरा को जानने वाली इतिहास की दृष्टि होनी चाहिये। वे कहते थे कि भारत में जो मंदिर हैं, सोमनाथ जैसे मंदिर वे हजारों किताबों से अधिक उनको भारतीय समाज जीवन की अमरता का रहस्य समझा सकते हैं। क्योंकि सोमनाथ का मंदिर वह है, जो ना जाने कितनी बार आक्रमणकारियों ने उसको धूलिसात किया, लेकिन हर बार अपने बल पर उठकर वैभव के साथ खड़ा हुआ। दुनिया की अन्य रियासतें एक बार नष्ट हुई तो इतिहास के कूड़ेदान में चली गई लेकिन भारत बार-बार मरकर भी फिर अमर हुआ। यही तो भारतीय जीवन है। वे कहते थे, इतिहास की दृष्टि के बारे में कि जब ग्रीस का अस्तित्व नहीं था, रोम अपने भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ था, भारत तब भी पूरी तरह से सक्रिय था। एक अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि एक जमाना था जब ग्रीक सेनाओं के सैनिकों के पद संचलनों के पदाघातों से दुनिया काँपा करती थी। आज वो ग्रीक कहाँ है ? वो इतिहास की कूड़ेदानी के अंदर खो गया, एक समय था जब रोम का सेनानी ध्वज दुनिया की हर एक उस भोग वस्तु के ऊपर लहराया करता था, आज वो रोम कहाँ है ? उसका बेबिलोन पहाड़ खंडहरों का ढेर बन गया है। जहाँ सीजर राज्य करता था वहाँ आज मकड़ियाँ जाला बुनती हैं और अनेक जातियाँ आई कुछ समय सीना फुलाकर रही और अपने पीछे रक्त और आँसूओं की नदी छोड़कर चली गई, लेकिन हम आज भी जिंदा हैं, क्यों ? हमारा जो

विश्व-कल्याण का धर्म है उसको हमने पकड़ा, उस धर्म की रक्षा के लिये, उस धर्म के साक्षात्कार के लिये, उसके लाभ के लिये यह समाज अमर है। आने वाले समय के अंदर विश्व को अगर एक परिवार बनाना है, विश्व में अगर पवित्रता, आध्यात्मिकता रहनी है, तो भारत में उन परंपराओं को पुनर्जीवित करना पड़ेगा।

शिकागो भाषण में उन्होंने कहा था, मैं करोड़ों हिन्दुओं की ओर से आपका अभिनंदन करता हूँ, सब धर्मों की माता की ओर से आपका अभिनंदन करता हूँ। मैं उस जगह से आया हूँ जिसने यहूदिओं को उस समय शरण दी, जब जेरुशलममें रोमन लोगों के अत्याचारों से उनका मंदिर धूल में मिला दिया गया। जब ईरान से प्रताड़ित करके निकाले गये लोग आये, तो उनको इस देश ने शरण दी। क्यों ? ये जो पूरा आध्यात्मिक चिंतन है, जो सबको एक मानता है, उसके कारण हमने शरण दी। और यह विशेषता केवल भारत में है। 1948 में इजराईल के बनने के बाद इजराईल के कांसुलिट ने दुनिया के 15 लाख (1.5 मिलियन) ज्यू जो थे, दुनिया के 104 देशों से इजराईल आये, उस इतिहास को जब उस कांसुलिट ने प्रकाशित किया इजराईल में, तब वह लिखता है कि सदियों के पिछले समय के अंदर दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों के अंदर यहूदियों के साथ अत्याचार हुए उनको दोयम दर्जे का नागरिक समझा गया, उनसे भेदभाव किया गया, उनका मर्डर किया गया, genocide किया गया, only one exception केवल एक मात्र अपवाद है, भारत। जहाँ इस दीर्घकाल के अंदर कभी भी भेदभाव या पक्षपात, या प्रताड़ना का शिकार यहूदी को नहीं होना पड़ा और इसलिए ये जो विशिष्टता है,और इस नाते उन्होंने कहा ये जो हमारी आध्यात्मिकता है, इसको हमें चारों ओर और अधिक विस्तारित करना पड़ेगा। और अगर यह करना है आनेवाले समय के अंदर तो, ऊपाय क्या हैं ? उन्होंने कहा, एक संगठन खड़ा करना पड़ेगा, उन्होंने एक जगह कहा कि we want to unite all powers of goodness against all the powers of evil. बुराई की समस्त ताकतों के विरुद्ध हमें अच्छाई की सब ताकतों को संगठित करना है और ये जो संगठित करना है, तो भारत का समाज जीवन दो बातों को भूल गया है, वो उन गलतियों का स्वीकार कर, ईर्ष्या को हम छोड़ें – एक दूसरे की ईर्ष्या, और मिलकर काम करने की मनोवृत्ति हम भूल चूके हैं। और इस नाते से ईर्ष्या रहित होकर प्रेम के बंधन में बाँधकर, मिलकर, एक-दूसरे के साथ आगे बढ़ने वाला एक अभेद्य संगठन, इसी से आने वाले समय के अंदर एक भारत का निर्माण होगा। और ये अगर करना है, तो उन्होंने कहा कि मुझे आशा युवकों से है क्योंकि मेरी आशाओं का वह केन्द्र है, मैं रहूँ या ना रहूँ लेकिन मेरी वाणी रहेगी। आनेवाले समय के अंदर उसको

अनुभव करके और लोग निकलेंगे और उस नाते से भारत का युवक कैसा हो ? भारत के समाज के प्रति उसकी दृष्टि कैसी हो ? तो स्वामी जी ने कहा, हर एक मन के अंदर सोचे, उनके शब्द थे कि बोलो "अज्ञानी भारतवासी, द्ररिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चांडाल भारतवासी मेरे भाई हैं। तू भी एक चिथड़े को अपने शरीर से लपेटकर उच्च स्वर से घोषणा कर कि भारतवासी मेरे भाई हैं, भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत के देवी-देवता मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फूलवारी और बुढ़ापे की काशी है। भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है और दिन-रात प्रार्थना करो हे भोलेनाथ, हे जगदम्बे मुझे मनुष्यत्व दो, मेरी कापुरुषता, मेरी कायरता को दूर करो, मुझे मनुष्य बनाओं" और उस नाते से ईश्वर हमें यह एक भाव दे, एक प्रेरणा दे, यह एक उनकी अपेक्षा है।

एक दूसरी बात उन्होंने उस समय कही, ये सपना पूरा होगा ऐसा समय आयेगा, और इसलिए आला सिंगा पेरुमल को जब अमेरिका से पत्र लिखा उस पत्र के अंदर एक जगह वे लिखते हैं कि मुझे लगता है कि ऐसा समय आयेगा, बडे महत्व के शब्द है उनके कि "भारत में लाखो युवक और युवतियाँ पवित्रता के अग्निमंत्र से दीक्षित होकर ईश्वर के प्रति अटल विश्वास से शक्तिमान बनकर गरीबों, पददलितों, पतितों के प्रति हृदय की सहानुभूति से सिंहों के समान साहसी बनकर इस भारत देश के एक कोने से दूसरे कोने तक उद्धार के संदेश, सेवा के संदेश, सामाजिक उत्थान के संदेश, समानता के संदेश देते हुए विचरण करते हुए घूमेंगे" आज हम 150 वे वर्ष पर विचार करते समय हम सोचें, यह जो स्वपन था - भारत खडा होगा; "लाखों युवक और युवतियाँ इस भाव को मन में लेते हुए विचरण करते हुए घूमेंगे" इस स्वप्न को साकार करने में, हम क्या कर सकते हैं ?

विद्यार्थी परिषद ने विचार किया कि स्वामी जी ने जिंदगी दी, लेकिन हम सब अपनी जिंदगी के साल देकर आने वाले समय में एक नया भारत, एक नयी दिशा के अंदर आगे बढ़ सके, समाज जीवन के अंदर जैसा चाहिये वैसा परिवर्तन लाने के लिये, जिन लाखों लोगों की कल्पना स्वामी जी ने की है, उसका जवाब विद्यार्थी परिषद की ओर से आज क्या हम स्वामी जी को दे सकते है ? स्वामी जी ने जब किसी समय कहा था कि 100 लोग मुझे मिल जायें जो मानवता के प्रति प्रेम से समर्पित अपनी सारी जिंदगी लगाने को तैयार हो, तो मैं दुनिया का चेहरा बदल दूँगा। मार्गरेट नोबल ने जाकर उनको ये कहा था कि मैं ये तो नहीं जानती कि 100 लोग कहाँ से आयेंगे पर 100 में से एक मैं इसके लिये समर्पित हूँ। तो जो स्वामी जी ने कहा वो लाखों लोग ? क्या उसमें से आनेवाले एक वर्ष के अंदर, विद्यार्थी परिषद के माध्यम से ऐसे 1000 युवक निकल सकते है ? जो जिंदगी का एक साल

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति देने के लिये देंगे ? मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि आखिर जिंदगी क्या है ? मैंने अंग्रेजी के कुछ वाक्य कभी पढ़े थे। लिखने वाले ने जिंदगी को एक उपमा दी, जिंदगी क्या है ? जिदगी ये है, और अगर जिंदगी ये है, तो उसका निष्कर्ष क्या है ? इस ढंग से वो कुछ पंक्तियाँ थी, और जैसे उसने कहा life is a game जिंदगी एक खेल है। तो उसमें क्या करना तो बोले play it, आगे उसने बोला life is journey, तो उसने बोला complete it, life is beauty तो बोले worship it, life is a mystery तो कहा unfold it मेरे मन में आता है कि हम कहें कि life is a book जिंदगी एक किताब है, एक पुस्तक है। एक पुस्तक में क्या होता है ? पुस्तक में प्रारंभ से अंत तक कुछ चैप्टर रहते हैं। यहाँ बैठा हुआ हर एक युवक और युवती इसका विचार करे कि life is a book. हमारी भी जिंदगी है, उस जिंदगी के अंदर कुछ चैप्टर निश्चित हैं। हम दुनिया में पैदा हुए, यह पहला चैप्टर हो गया; हम साँप की तरह रेंगते हैं यह दूसरा चैप्टर हो गया; दोनों हाथ दोनों घुटनों के बल चलते हैं यह तीसरा चैप्टर हो गया; हम लड़खड़ाते चलते हें, यह चौथा चैप्टर हो गया; प्रायमरी स्कुल में गये पाँचवा चैप्टर हो गया; मिडल में गये, छठा हो गया, सेकंडरी में गये सातवाँ हो गया; कॉलेज में गये आठवाँ हो गया; नौकरी-धंधा, व्यवसाय कुछ किया, दसवाँ हो गया; शादी की ग्यारहवाँ हो गया; बच्चे हो गये और हम बूढ़े हो गये, बारहवाँ हो गया, हम मर गये तेरहवाँ हो गया। ये तेरह चैप्टर मेरी, आपकी, सबकी जिंदगी में है, यह निश्चित है।

मेरा इतना ही कहना है कि आनेवाले इस वर्ष के अंदर क्या हम में से कम से कम 1000 युवकों की जिंदगी की बुक के अंदर उस 13 चैप्टरों के अलावा "मेरी जिंदगी का एक साल विद्यार्थी परिषद के आवाहन पर समाज के लिये दिया" ये चैप्टर अगर जुड़ जायेगा तो क्या अपनी जिंदगी में कोई बड़ी उथल-पुथल हो जाने वाली है ? मैं आज यही कामना करता हूँ कि हमारी जिंदगी के पुस्तक के अंदर इस चैप्टर को इन्सर्ट करो, और जितने अधिक युवकों के जीवन की पुस्तक में यह चैप्टर इन्सर्ट होगा, उसी में से आने वाले समय में एक नया भारत बनेगा। निश्चित बनेगा। भारत को सब तरफ से उठाने की अवश्यक्ता है। उसका विवेचन करते हुए स्वामी जी ने कहा था, "एक नया भारत खड़ा हो" और बड़ा काव्यात्मक वर्णन करते है। कहाँ से खड़ा हो ? "मोची की दुकान से, धोबी के मकान से, किसानों के हलों से, खेतों से, खलिहानों से, कारखानों से, कारखाने की चिमनियों से, हाट से, बाजार से, गाँव से, शहर से, जंगल से, पहाड़ से, नदियों से, झरनों से, भारत जहाँ-जहाँ है, हर जगह से एक नया भारत खड़ा हो" वो भारत खड़ा हम करेंगे और उस

नाते से एक नवीन भारत का निर्माण, न केवल अपने लिये, बल्कि विश्व के कल्याण के लिये करने की अवश्यकता है।

जिस तरह से महान युग प्रवर्तक स्वामी जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का कार्य प्रारंभ हुआ है, आज वह महान युगपुरुष हम सबके हृदय के अंदर भी प्रेरणा प्रदान करे और हम अपनी जिंदगी भारतमाता की सेवा में लगायें। स्वामी जी बार-बार कहते थे कि देवता के चरणों के अंदर मुर्झाये हुए सुगंधहीन फूल चढ़ाये नहीं जाते हैं, फूल तब चढ़ाये जाते हैं, जब वे ताजा रहते हैं। युवा पीढ़ी उसमें भाव है, उसमें शक्ति है, उसमें साहस है, उसमें सामर्थ्य है। अपने जीवन पुष्पों को समर्पित करने के लिये भगवान हमको प्रेरणा दें।

(उपरोक्त भाषण अभाविप के 58 वे राष्ट्रीय अधिवेशन (26 से 28 दिसंबर 2012) पटना में रा.स्व. संघ के सह सरकार्यवाह श्री. सुरेश सोनी जी द्वारा दिया गया)

क्या आप युवा है ? युवा वह है -

जो अनीति से लड़ता है ।
जो दुर्गुणों से दूर रहता है ।
जो काल की चाल को बदल देता है ।
जिसमें जोश के साथ होश भी है ।
जिसमें राष्ट्र के लिए बलिदान की आस्था है ।
जो समस्याओं का समाधान निकालता है ।
जो प्रेरक इतिहास रचता है ।
जो बातों का बादशाह नहीं बल्कि करके दिखाता है ।